पाठ-1

मैं ढूँढता तुझे था

– रामनरेश त्रिपाठी

आइए सीखें

■ कविता का भाव ■ वर्तनी सुधार ■ विलोम शब्द ■ वचन ■ पर्यायवाची शब्द।

मैं ढूँढ़ता तुझे था जब कुंज और वन में,
तू खोजता मुझे था तब दीन के वतन में।
तू आह बन किसी की मुझको पुकारता था,
मैं था तुझे बुलाता संगीत में, भजन में।
मेरे लिए खड़ा था दुखियों के द्वार पर तू,
मैं बाट जोहता था तेरी किसी चमन में।
बनकर किसी के आँसू मेरे लिए बहा तू,
आँखें लगीं थीं मेरी तब मान और धन में।
बाजे बजा-बजाकर मैं था तुझे रिझाता,
तब तू लगा हुआ था पतितों के संगठन में।
मैं था विरक्त जग से इसकी अनित्यता पर,
उत्थान भर रहा था तब तू किसी पतन में।

बेबस दुखी जनों के तू बीच में खड़ा था,
मैं स्वर्ग देखता था झुकता कहाँ चरन में।

शिक्षण संकेत

▸ लय और हाव-भाव के साथ कविता का सस्वर वाचन कराएँ ▸ कविता में आए कठिन शब्दों के अर्थ स्पष्ट करें ▸ बच्चों के सहयोग से कविता का भाव समझाएँ ▸ वर्तनी सुधार के प्रश्न हल करवाएँ ▸ कविता में प्रवाह लाने के लिए अनेक ऐसे शब्दों का सामान्यतः प्रयोग कर दिया जाता है, जो व्याकरण की दृष्टि से अशुद्ध हैं। जैसे-अनेकों। ऐसे शब्दों के बारे में विद्यार्थियों को परिचित कराएँ ▸ विद्यार्थियों को अकारान्त, इकारान्त तथा उकारान्त जैसे शब्दों से परिचित कराएँ।

तूने दिए अनेकों अवसर न मिल सका मैं,
तू कर्म में मगन था, मैं व्यस्त था कथन में।

कैसे तुझे मिलूँगा, जब भीड़ इस कदर है,
हैरान होके भगवन, आया हूँ मैं सरन में।

तू रूप है किरन में, सौन्दर्य है सुमन में,
तू प्राण है पवन में, विस्तार है गगन में।

हे दीनबंधु! ऐसी प्रतिभा प्रदान कर तू,
देखूँ तुझे दृगों में, मन में तथा वचन में।

कठिनाइयों, दुखों का इतिहास ही सुयश है,
मुझको समर्थ कर तू बस कष्ट के सहन में।

दुख में न हार मानूँ, सुख में तुझे न भूलूँ,
ऐसा प्रभाव भर दे, मेरे अधीर मन में।

शब्दार्थ

कुंज=बगीचा। **दीन**=गरीब। **बाट जोहना**=प्रतीक्षा करना। **पतित**=गिरे हुए। **विरक्त**=उदासीन। **बेबस**=विवश। **मगन**=तल्लीन, एकाग्र। **समर्थ**=योग्य, लायक। **पवन**=हवा। **गगन**=आकाश। **दृग**=नेत्र। **सुयश**=प्रसिद्धि। **अधीर**=व्याकुल।

अनुभव विस्तार

वस्तुनिष्ठ प्रश्न :

1. **(क) सही जोड़ी बनाइए—**
   - दीन के – विरक्त
   - कर्म में – वतन
   - अधीर – मगन
   - जग से – मन

(ख) दिए गए शब्दों में से उपयुक्त शब्द छाँटकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

- मैं ..... तुझे था जब कुंज और वन में। (खोजता/ढूँढ़ता)
- आँखें..... मेरी तब मान और धन में। (लगीं थी/खुली थी)
- हे दीनबन्धु! ऐसी ..... प्रदान कर तू। (प्रतिभा/प्रतिमा)
- ऐसा प्रभाव भर दे मेरे ..... मन में। (अशांत/अधीर)

अति लघु उत्तरीय प्रश्न :

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में दीजिए—

(क) कवि ने ईश्वर को दीनबंधु क्यों कहा है?

(ख) अधीर मन की अधीरता किस प्रकार दूर हो सकती है?

(ग) 'जग की अनित्यता' का क्या अर्थ है?

(घ) कवि किस स्थिति में हार नहीं मानता?

(ङ) 'किरन', 'सुमन', 'पवन' और 'गगन' किसके स्वरूप हैं?

(च) कविता में 'मैं' और 'तू' शब्दों का प्रयोग किसके लिए किया गया है?

लघु उत्तरीय प्रश्न :

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन से पाँच वाक्यों में दीजिए—

(क) केवल संगीत और भजन में ईश्वर को न ढूँढ़कर और कहाँ-कहाँ ढूँढ़ना चाहिए?

(ख) ''कर्म में मगन और कथन में व्यस्त'' इस पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।

(ग) कवि और ईश्वर की उपस्थिति के पाँच-पाँच स्थान बताइए।

(घ) 'मान और धन की अपेक्षा ईश्वर दीन दुखियों के आँसू में निवास करता है।' समझाइए।

(ङ) 'दुख में न हार मानूँ सुख में तुझे न भूलूँ' पंक्ति में निहित भाव बताइए।

भाषा की बात :

4. निम्नलिखित शब्दों का शुद्ध उच्चारण कीजिए—

कुंज, संगीत, संगठन, विरक्त, समर्थ

5. निम्नलिखित शब्दों की शुद्ध वर्तनी लिखिए—

दुआर, उतथान, आंख, स्वरग, कठनाई, सूयश, सोन्दर्य

6. निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए—

बाट, आँसू, पतित, संगठन, अनित्यता

पढ़िए और समझिए—

मान-अपमान, दुखी-सुखी, विरक्त-आसक्त, सुयश-अपयश, व्यस्त-अव्यस्त

उपर्युक्त शब्दों से परस्पर विरोधी अर्थ का बोध होता है, दूसरा शब्द पहले शब्द का विपरीत अर्थ बता रहा है।

किसी शब्द का विपरीत अर्थ बताने वाला शब्द विलोम या विपरीतार्थी कहलाता है।

7. निम्नलिखित के विलोम शब्द लिखिए—

स्वर्ग, धीर, नित्य, हार, सुख

ध्यान दीजिए :

निम्नलिखित शब्दों को पढ़िए और समझिए—

दुखियों, कठिनाइयों, गीतों, आँसुओं, आँखों

उपर्युक्त शब्द क्रमशः दुखी, कठिनाई, गीत, आँसू, आँख के बहुवचन रूप हैं। जैसे-दुखी का दुखियों।

जो संज्ञा शब्द एक इकाई का बोध कराए, उसे एक वचन और जो एक से अधिक का बोध कराए, उसे बहुवचन कहते हैं।

8. निम्नलिखित वाक्यों को बहुवचन में बदलिए—

(क) महिला भजन गा रही है।

(ख) दुखी की सहायता करो।

(ग) तुम अपनी कठिनाई बताओ।

(घ) अपनी पुस्तक को सँभालकर रखना चाहिए।

(ङ) चिड़िया आकाश में उड़ रही है।

9. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द छाँटकर लिखिए—

(क) आँख - दृग, आग, नयन, हर्ष, लोचन।

(ख) आकाश - पानी, गगन, बिजली, नभ, अम्बर।

(ग) हवा - वायु, सुधा, पवन, समीर, सखा।

(घ) फूल - चिड़िया, सुमन, बादल, प्रसून, पुष्प।

अब करने की बारी

- इस कविता को कंठस्थ कीजिए और कक्षा में सुनाइए।
- इसी प्रकार की अन्य कविताओं को खोजकर पढ़िए।
- इस कविता में आपको जो पंक्तियाँ अच्छी लगी हों उनकी पट्टिका बनाकर कक्षा में लगाइए।
- ''तू रूप है किरन में, सौन्दर्य है सुमन में। तू प्राण है पवन में, विस्तार है गगन में॥'' पंक्तियों के आधार पर एक चित्र बनाइए।

❑❑